दो पैरों से पहले क्या इन्सान उंगलियों पर चलते थे?

जीव वैज्ञानिकों के बीच एक बहस का विषय यह है कि इन्सानों ने दो पैरों पर चलना कैसे शुरू किया और किन चरणों से गुज़रकर वे चौपाए से दोपाए बने। कई विकासविद मानते हैं कि पहले इन्सान पेड़ों से मैदान में उतरे और उसके बाद ही उन्होंने दो पैरों पर चलना शुरू किया। दूसरी ओर, अब इस बात के पक्ष में काफी प्रमाण मिल रहे हैं कि संभवतः दो पैरों पर चलना सीखने के बाद ही इन्सान पेड़ों से उतरे हैं।

वर्तमान में इन्सान के सबसे निकट सम्बंधी गोरिल्ला और चिंपैंज़ी हैं। मानव समेत इन सबके पूर्वज उंगलियों की पोरों पर चलते रहे होंगे क्योंकि आज भी गोरिल्ला और चिंपैंज़ी पोरों पर ही चलते हैं। इनकी कलाइयों की हड्डियों की रचना ऐसी है कि जब इनकी हथेली पर वज़न पड़ता है तो वह पिचकती नहीं है। इसके आधार पर यह मानना मुनासिब लगता है कि सुदूर अतीत में इन्सान भी अवश्य ही पोरों पर चलने की अवस्था से गुज़रे होंगे।

मगर सब लोग सहमत नहीं हैं। जैसे मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट फॉर इवॉल्यूशनरी एंथ्रोपोलॉजी की ट्रेसी किवेल ने चिंपैंज़ी, गोरिल्ला, बोनोबो तथा इनके कुछ दूर के वानर सम्बंधियों की कलाइयों का अध्ययन किया तो पाया कि पोरों पर चलने के लिए जो विशेषताएं चिंपैंज़ी और बोनोबो में पाई जाती हैं, वे गोरिल्ला में नदारद हैं जबकि ऐसे बंदरों में उपस्थित हैं जो पोरों पर नहीं चलते।

किवेल का कहना है कि चिंपैंज़ी और गोरिल्ला पोरों पर चलने के लिए अलग-अलग हड्डियों का सहारा लेते हैं। इसलिए हो सकता है कि पोरों पर चलना इन दोनों में अलग-अलग स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। अर्थात यह ज़रूरी नहीं है कि यह लक्षण इन सबके पूर्वजों में रहा होगा।

किवेल का विचार है कि शायद चिंपैंज़ी की कलाई की हड्डियां इस हिसाब से विकसित हुई होंगी कि वह पेड़ की एक शाखा पर खड़े रहकर दूसरी को पकड़ते समय कलाई को स्थिर रख सके। इसके साथ ही वे अपने घुटनों और कोहनियों को मोड़कर शरीर को स्थिरता देते होंगे जैसा कि हम आज भी तब करते हैं जब किसी संकरी चीज़ पर चलते हैं। दरअसल, आधुनिक चिंपैंज़ी और बोनोबो ठीक यह करते हैं। इस तरह से घुटनों व कोहनी को मोड़कर खड़े रहने में कलाई पर अधिक दबाव पड़ता होगा और इस दबाव की वजह से ही कलाई में वे विशेषताएं विकसित हुई होंगी जो हमें आजकल दिखाई देती हैं।

बहरहाल पोरों पर चलने के सिद्धांत के हिमायती इस विश्लेषण से सहमत नहीं हैं। वैसे भी इस पूरी बहस में जैव विकास का एक महत्वपूर्ण सवाल छिपा है। वह सवाल यह है कि क्या आज मौजूद रचनाओं के बारे में हम मान सकते हैं कि वे उसी मकसद से विकसित हुई हैं जिसे वे वर्तमान में पूरा करती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***